के०पी० सक्सेना

पदमश्री

"क़लम"

72, नारायण नगर

राम सागर लखनऊ- 226016

कहा सुनी – 380148

चलते फिरते – 9839015214

" यत्र तत्र .. और थोड़ा वग़ैरा वग़ैरा "

दिलीप अवस्थी .. एक ऐसा नाम जिसे मैं ने दोनों आँखों से अलग अलग करीब से देखा है ! एक आँख से सफलता के सोपान लांघता हुआ एक ख-बरनवीस, और दूसरी आँख से व्यंग्य की चाशनी अपने अंदर समेटे हुए एक तंज़निगार ! इन दोनों नामों के मकतूलों को दिलीप ने सही हवा दी है ! मैं ठहरा व्यंग्य का एक अदना छात्र .. समीक्षा की गहराईयों को कैसे नापूं ? अलबत्ता यह तय है कि व्यंग्य की लज़ीज़ बिरियानी में, सही अनुपात में जिन मसालों का होना ज़रूरी है, वे सब इनके पास मौजूद हैं ! चखने वाले के टेस्ट के न यह ज़िम्मेदार हैं न मैं ! सही होते हुए भी मिरचें ज़्यादा लगें तो इस में कुक का क्या दोष ?

'इण्डिया टुडे' से 'जागरण' तक का सफ़र बखूबी तय करने वाले दिलीप में एक खास खूबी है ! पढ़ते जाइये तो मीठी मीठी सी चुभन ऐसा सुख देती है कि बस यह चुभन जारी रहे ! एक खुरदुरे से पान का परत दर परत खु-लते जाने का सुख ! हर हफ़्ते पढ़ता हूं ! लगता है पाठक की नब्ज़ पर इन-की अंगुलियां हैं जो अभावों, विषमताओं की पीड़ा को नाप लेती हैं ! यही एक उम्दा व्यंग्यकार का मानक है ! पान सभी खाते हैं, पर रचता किसी किसी के होठों पर ही है ! बस पान खाने का सलीका चाहिये -- बात कहने को शब्दों का सही संतुलन चाहिये !

हर सुहागिन पर हर गहना नहीं जंचता ! संग्रह की हर रचना आपको अपील करे ज़रूरी नहीं ! हो सकता है कि दूसरा उस पर आहा अहा कर उठे ! ज़रूरी है समग्रता का टोटल इम्पैक्ट .. यानी पूरी हांडी कैसी पकी है ? उसकी गारंटी मैं लेता हूं ! 'यत्र तत्र' मैं ने पढ़ा ही नहीं, हर हफ़्ते अंदर तक पिया है ! यह पानी मिनरल वाटर भले न हो, मगर इस में बीयर जैसा हल्का सुरूर है ! एक वरिष्ठ एवं यशस्वी संगीतज्ञ के पुत्र होने के नाते दिलीप के शब्दों में सांस्कारिक सुरताल की झनक है !

ज़्यादा कहूं तो आप समझोगे कि बिला वजह बाहरी समर्थन दे रहा हूं ! चुनांचे मंगल कामना भी आशीष भी ! अब आप पढ़ना शुरु करो !

2015 - इन्दिरा नगर
लखनऊ - 16

नाचीज़,

K. P. Saxena

K.P.SAXENA - "PADMASHRI"

72, Narain Nagar, Ram Sagar, Lucknow- 226016

Phone: 380148 Mobile : 9839015214